National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(58): 271-273
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. सुमित कुमार
ज्योतिषाचार्य,
कल्याण नगर , कुरुक्षेत्र.
हरियाणा

Correspondence:
डॉ. सुमित कुमार
ज्योतिषाचार्य,
कल्याण नगर , कुरुक्षेत्र.
हरियाणा

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार रोग

डॉ. सुमित कुमार

भूमिका

संस्कृत भाषा, जिसे 'देववाणी' कहा जाता है, न केवल प्राचीनतम भाषा है, बल्कि यह ज्ञान और विज्ञान की भी जननी है। संस्कृत में रचित वेद, उपनिषद, पुराण, आयुर्वेद, ज्योतिष, योग और अन्य शास्त्र मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित करते हैं। विशेष रूप से, ज्योतिष शास्त्र न केवल ग्रहों की स्थिति बताने का कार्य करता है, बल्कि यह स्वास्थ्य, रोगों से मुक्ति और समग्र जीवनशैली पर भी गहन प्रभाव डालता है।

रोगों की उत्पत्ति और उनके कारणों पर भारतीय चिकित्सा शास्त्र- आयुर्वेद, ज्योतिष और धर्मशास्त्र में गहन चर्चा की गई है। हमारे शास्त्रों में बताया गया है कि रोग केवल शरीर में विकृति उत्पन्न होने के कारण नहीं होते, बल्कि इनके पीछे कई प्रकार के कारण कार्य करते हैं, जैसे- कर्मजन्य दोष, प्रकृति-विकार, मानसिक विकार, ग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव आदि।

रोगों के प्रकार, उनके कारणों और निवारण उपायों का वर्णन शास्त्रीय प्रमाणों के साथ इस आलेख में किया गया है। इस लेख में संस्कृत भाषा की महिमा, ज्योतिष शास्त्र की विशेषताएँ और स्वास्थ्य के लक्षणों का विस्तार से वर्णन प्रमाणित ग्रंथों के श्लोकों के आधार पर प्रस्तुत किए गये हैं। यथा -

१. रोगों के प्रकार (Types of Diseases)

शास्त्रों में रोगों को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

i. जन्मजात रोग (Congenital Diseases)

ii. आकस्मिक रोग (Sudden/Acute Diseases)

iii. अदृष्ट कारण से रोग (Diseases due to Unseen Factors - Karma & Destiny)

iv. प्रकृति विकार जन्य रोग (Diseases due to Environmental & Dietary Factors)

v. मानसिक रोग (Psychological & Neurological Disorders)

२. जन्मजात रोग (Congenital Diseases) और उनके कारण

(क) रोगों का कारण – पूर्व जन्म के कर्म (Karmic Diseases)

प्रमाण:

"जातकर्मफलैर्व्याधिः पूर्वदेहकृतैः शुभैः।"[1]

(अर्थ: जन्मजात रोग पूर्व जन्म के कर्मों के फलस्वरूप होते हैं।)

ये वो रोग होते हैं जो बालक को जन्म से ही प्राप्त होते हैं. इनमे उनके इस जन्म का कोई दोष नहीं होता अपितु ये रोग प्रारब्ध के साथ प्राप्त होते हैं. ये रोग बालक को जन्म से ही देखे जाते हैं, जैसे:-

शरीर का कोई अंग का कटा होना या कोई ऐसा असाध्य रोग जैसे मानसिक रोग, आँखों का अंधापन इत्यादि.

(ख) माता-पिता के दोष एवं गर्भावस्था में कुपोषण से होने वाले रोग.

प्रमाण:

"गर्भे दोषाः स्यातां मातृपितृकृताः संस्कारतः।"[2]

(अर्थ: माता-पिता के दोषों, उनकी जीवनशैली और गर्भावस्था में कुपोषण के कारण जन्मजात रोग उत्पन्न हो सकते हैं।)

जन्मजात रोगों के प्रमुख कारण: माता-पिता की अस्वस्थ जीवनशैली गर्भावस्था में अनुचित आहार पितृ-दोष या ग्रहों का अशुभ प्रभाव होता है. इसका उपाय भी साथ दिया जा रहा है, क्योंकि इसमें माता पिता के आहार विहार का मुख्य योगदान होता है तो इस लिए इन रोगों से बचा जा सकता है.

निवारण उपाय:

गर्भधारण से पूर्व माता-पिता का शुद्ध आहार और ब्रह्मचर्य का पालन गर्भावस्था में विशेष मंत्रों का जाप, जैसे "गर्भ रक्षा स्तोत्र" का पाठ और कुंडली के आधार पर उचित शांति कर्म कर के इन रोगों से बचा जा सकता है.

३. आकस्मिक रोग (Sudden/Acute Diseases) और उनके कारण

(क) रोग आकस्मिक होते हैं, लेकिन इनके पीछे कारण छिपे होते हैं, जिन्हें जीवन यापन की शैली से समझा जा सकता है. जब मनुष्य प्रकृति के विपरीत आचरण करते हुए जीवन यापन करता है तो उसी के कारण उसे रोगों की प्राप्ति होती है. इनका निवारण करने के लिए मनुष्य को अपनी जीवन शैली में सुधार करने की जरूरत होती है.

प्रमाण:

"न चैकाजं न द्विजं रोगः सहसा जायते नरः।"[3]

(अर्थ: कोई भी रोग अचानक उत्पन्न नहीं होता, उसके पीछे कुछ गुप्त कारण होते हैं। इन गुप्त कारणों के मनुष्य का जीवन शैली का मुख्य योगदान होता है)

(ख) आकस्मिक रोगों में मुख्यतः शारीरिक दोष और बाह्य प्रभाव कार्य करते हैं, इनमे मनुष्य की प्रकृति के अनुसार रोगों की प्राप्ति होना मुख्य कारण होता है.

प्रमाण:

"आगन्तुकाः रोगा बाह्यहेतुजन्याः।"[4]

(अर्थ: आकस्मिक रूप से उत्पन्न रोग बाह्य कारकों के कारण होते हैं।)

आकस्मिक रोगों के प्रमुख कारण:

बाहरी चोट या संक्रमण विषाक्त भोजन या प्रदूषित जल विषैली गैसें और वातावरण ये सब मनुष्य को आकस्मिक रोग देता है. इनका कोई कारण पहले से निश्चित नहीं होता।

निवारण उपाय:

पाचन शक्ति को सुधारना विषनाशक औषधियों का सेवन नियमित यज्ञ एवं हवन करना ये सब मनुष्य को आकस्मिक होने वाले रोगों से बचा सकते हैं.

४. अदृष्ट कारण से रोग (Diseases due to Unseen Factors - Karma & Destiny)

(क) रोगों के पीछे अदृष्ट (अलौकिक) कारण कार्य कर सकते हैं, इनको जानना सरल नहीं है. क्योंकि प्रारब्ध मनुष्य के पूर्व जन्मों के कर्मों के अनुसार ही बनता है. जन्म के साथ ही हमें उसका परिणाम रोगों के रूप में प्राप्त होता है ये निश्चित नहीं है, अपितु ये हमें कभी भी किसी भी प्रकार के रोग के रूप में मिल सकता है.

प्रमाण:

"पूर्वजन्मकृतं पापं व्याधिरूपेण जायते।"[5]

(अर्थ: पूर्व जन्म में किए गए पाप कर्म रोगों के रूप में उत्पन्न होते हैं।)

(ख) ग्रहों की अशुभ दशा भी रोग उत्पन्न कर सकती है

प्रमाण:

"ग्रहाणां दोषयुक्तत्वे रोगाः स्युः शरीरिणाम्।"[6]

(अर्थ: ग्रहों की अशुभ स्थिति होने पर मनुष्य को अनेक प्रकार के रोग होते हैं।)

निवारण उपाय:

मंत्र चिकित्सा: ग्रहों के लिए विशेष मंत्रों का जाप दान-पुण्य: ग्रहों की शांति के लिए दान योग और ध्यान: ग्रह दोषों के निवारण के लिए प्राणायाम इत्यादि उपायों के द्वारा इन रोगों का निवारण किया जा सकता है.

५. प्रकृति विकार जन्य रोग (Diseases due to Environmental & Dietary Factors)

(क) असंतुलित आहार और दिनचर्या के कारण रोग उत्पन्न होते हैं, दिनचर्या के कारण हमारे जीवन में असंतुलन पैदा हो जाता है जो आगे चल कर हमें रोगों के रूप में देखने को मिलता है.

प्रमाण:

"अतिस्निग्धं रुक्षं विषमं च भोजनं व्याधिहेतवः।"[7]

(अर्थ: बहुत अधिक तैलीय, सूखा या विषम आहार रोगों का कारण बनता है।)

निवारण उपाय:

सात्त्विक आहार का सेवन भोजन में संतुलन बनाए रखना इस प्रकार के रोगों से बचने का सरलतम उपाय है.

६. मानसिक रोग (Psychological & Neurological Disorders)

(क) मानसिक विकारों का प्रमुख कारण – असंयमित मन और नकारात्मक सोच जिसके कारण मानसिक उन्माद पैदा होते हैं और रक्त से लेकर मानसिक बीमारी पैदा होती हैं.

प्रमाण:

"मनसः कारणं रोगाः शोकक्रोधभयं भयात्।"[8]

(अर्थ: मानसिक रोगों का कारण शोक, क्रोध और भय होता है।)

निवारण उपाय:

नियमित ध्यान और योग सात्त्विक संगति और सकारात्मक विचार ऐसे रोगों से बचने में हमारी मदद करते हैं. इनके द्वारा ही अपनी दिनचर्या को सुधार के इनसे बचा जा सकता है.

७. रोगों के मूल कारण और निवारण का सारांश

संस्कृत भाषा की महिमा

संस्कृत भाषा को देवताओं की भाषा माना जाता है, और यह न केवल धार्मिक ग्रंथों की भाषा है, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध है।

संस्कृत भाषा पर प्रमाणित श्लोक

१. महर्षि पाणिनि का कथन:

"संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्या ब्रह्मणा पुरा।"[9]

(अर्थात: संस्कृत भाषा को स्वयं ब्रह्मा ने उत्पन्न किया था, और यह दैवी भाषा है।)

२. महर्षि कालिदास द्वारा संस्कृत की महिमा:

"काव्येषु नाटकं रम्यं, तत्र रम्या शकुंतला।"[10]

(अर्थात: सभी काव्यों में नाटक सर्वश्रेष्ठ है, और नाटकों में 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' श्रेष्ठ है।)

संस्कृत भाषा में उच्चारित मंत्रों के कंपन (vibrations) से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

ज्योतिष शास्त्र की विशेषता:-

ज्योतिष शास्त्र केवल भविष्यवाणी करने का साधन नहीं है, बल्कि यह जीवनशैली, स्वास्थ्य और मानसिक शांति के लिए मार्गदर्शन भी देता है।

१. ज्योतिष का उद्देश्य

"यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।

तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम्॥"[11]

(अर्थात: जैसे मोर के सिर पर शिखा और सर्प के मस्तक पर मणि होती है, वैसे ही वेदांगों में ज्योतिष शास्त्र का सर्वोच्च स्थान है।)

२. ज्योतिष और स्वास्थ्य का संबंध

"ग्रहाणां बलमज्ञात्वा व्याधिं नो शमयेद्भिषक्।"[12]

(अर्थात: जब तक ग्रहों की शक्ति और प्रभाव को नहीं समझा जाता, तब तक कोई भी वैद्य रोगों का समुचित उपचार नहीं कर सकता।)

इससे स्पष्ट होता है कि ज्योतिष शास्त्र में स्वास्थ्य और रोगों का गहरा संबंध बताया गया है। स्वस्थ व्यक्ति के लक्षण (स्वास्थ्य लक्षण) आयुर्वेद और ज्योतिष में स्वास्थ्य के लिए स्पष्ट लक्षण बताए गए हैं। चरक संहिता में कहा गया है:

"समदोषः समाग्निश्च समधातु मलक्रियः।

प्रसन्नात्मेन्द्रियमनः स्वस्थ इत्यभिधीयते॥"[13]

(अर्थात: जिसका वात, पित्त, कफ संतुलित हो, पाचन शक्ति सही हो, धातुएँ संतुलित हों, मल-मूत्र का निष्कासन सही हो, तथा मन, आत्मा और इंद्रियाँ प्रसन्न हों, वह व्यक्ति स्वस्थ कहलाता है।)

स्वस्थ व्यक्ति की विशेषताएँ:

1. शरीर में तीनों दोषों (वात, पित्त, कफ) का संतुलन।
2. अच्छी पाचन शक्ति और रक्त संचार।
3. मन और आत्मा में संतुलन एवं प्रसन्नता।

रोगों से मुक्ति के लिए ज्योतिषीय उपाय

ज्योतिष शास्त्र में कहा गया है कि ग्रहों की अशुभ स्थिति से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। विभिन्न ग्रहों से उत्पन्न रोगों और उनके उपचार के लिए प्रमाणित उपाय निम्नलिखित हैं।

१. ग्रहों के अनुसार रोग और उपाय

२. विशेष मंत्र चिकित्सा

"ॐ ह्रीं सूर्याय नमः" (सूर्य दोष के लिए)

"ॐ चं चंद्राय नमः" (चंद्र दोष के लिए)

"ॐ अंगारकाय नमः" (मंगल दोष के लिए)

प्रमाण:

"मन्त्रैस्तु ग्रहपीडायां नश्यन्त्याशु न संशयः।"[14]

(अर्थात: मंत्रों के द्वारा ग्रहों की पीड़ा नष्ट हो जाती है, इसमें कोई संदेह नहीं।)

निष्कर्ष

शास्त्रों में रोगों के विभिन्न कारणों का विस्तार से वर्णन किया गया है। जन्मजात दोष, आकस्मिक दुर्घटनाएँ, ग्रहों की दशाएँ, प्रकृति के विकार और मानसिक असंतुलन-ये सभी विभिन्न प्रकार के रोगों को जन्म देते हैं। यदि हम शास्त्रों के मार्गदर्शन का पालन करें, तो न केवल हम रोगों से बच सकते हैं, बल्कि संपूर्ण स्वास्थ्य और आध्यात्मिक शांति भी प्राप्त कर सकते हैं।

पाद टिप्पणी:-

[1] बृहद पराशर होराशास्त्र, अध्याय 6, श्लोक 34

[2] सुश्रुत संहिता, सूत्रस्थान 10.12

[3] चरक संहिता, सूत्रस्थान 8.14

[4] सुश्रुत संहिता, निदानस्थान 3.2

[5] ब्रह्म वैवर्त पुराण, प्रकृति खंड 27.23

[6] बृहत संहिता, अध्याय 2, श्लोक 21

[7] अष्टांग हृदय, सूत्रस्थान 12.8

[8] चरक संहिता, सूत्रस्थान 8.16

[9] व्याकरण महाभाष्य – पतंजलि

[10] अभिज्ञानशाकुंतलम् – कालिदास

[11] वृहज्जातकम् – वराहमिहिर

[12] बृहत्पराशर होराशास्त्र – पराशर मुनि

[13] चरक संहिता, सूत्रस्थान 9.18

[14] बृहद पराशर होराशास्त्र 67.21